कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित )

क्रम संख्या....

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन.....

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

## प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

| प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक | प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| 1 | | 19 | |
| 2 | | 20 | |
| 3 | | 21 | |
| 4 | | 22 | |
| 5 | | 23 | |
| 6 | | 24 | |
| 7 | | 25 | |
| 8 | | 26 | |
| 9 | | 27 | |
| 10 | | 28 | |
| 11 | | 29 | |
| 12 | | 30 | |
| 13 | | 31 | |
| 14 | | योग | |
| 15 | | प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff) | |
| 16 | | अंकों में | शब्दों में |
| 17 | | | |
| 18 | | | |

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

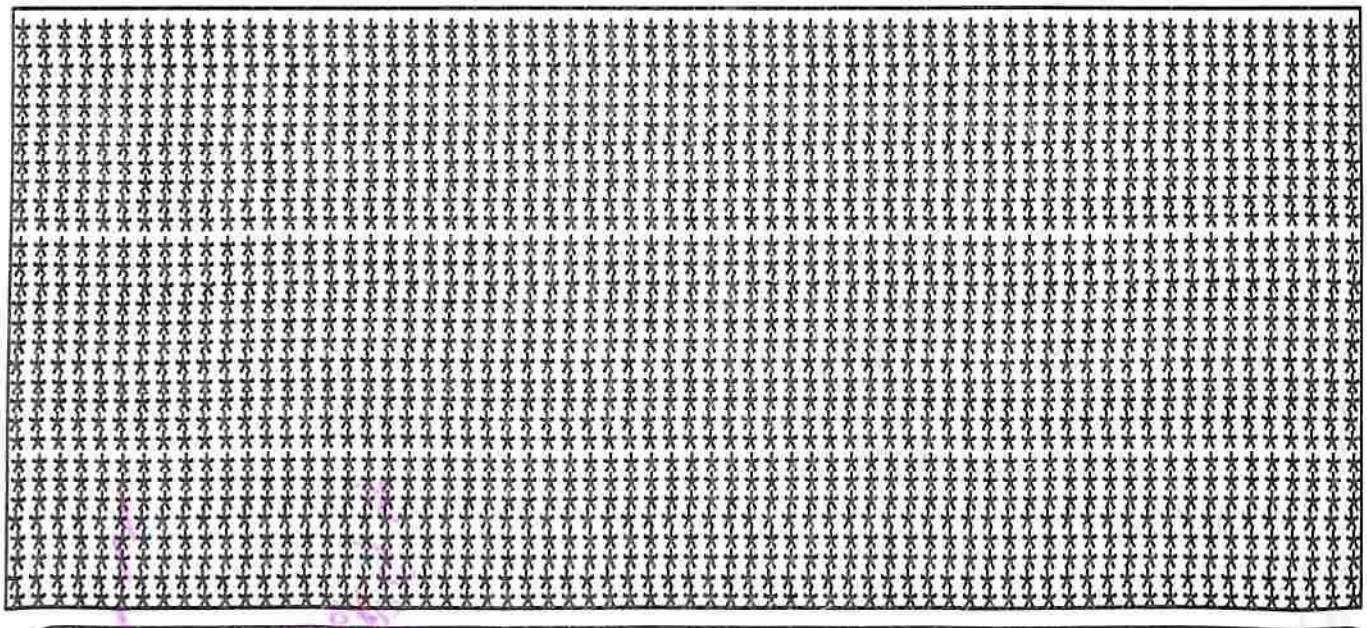

## परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

| शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

1 संकेत → अनन्तरं सर्वे - - - - - - - - - - धावनम् अकरोत् ।

प्रसंग →

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तिका 'रुचिरा' के द्वितीय अध्याय 'संघे शक्तिः' से लिया गया है। यह पाठ पण्डित नारायण शर्मा द्वारा रचित हितोपदेश से लिया गया है। इस पाठांश में लेखक ने एकता में शक्ति को उदाहरण सहित प्रस्तुत करते हुए कहा है कि -

अनुवाद →

इसके बाद सभी जाल के द्वारा बँध गये। इसके बाद जिसके वचन से वहाँ फँसे थे सभी उसका तिरस्कार करने लगे। उसका तिरस्कार सुनकर चित्रग्रीव बोला → इसमें इसका दोष नहीं है। विपत्ति के काल में आश्चर्य कायर पुरुष का लक्षण होता है। तो यहाँ धैर्य का सहारा लेकर उपाय सोचो। इस समय में भी यही करें। सभी एकचित्त होकर जाल को लेकर उड़ जाओ।" ऐसा चिंतन करके सभी पक्षी जाल को लेकर उड़ गये। इसके बाद वह शिकारी बहुत दूर तक उन जाल का अपहरण करने वाले पक्षियों को देखकर पीछा किया।

विशेष →

(i) इस गद्यांश की भाषा सरल, मधुर व ज्ञानप्रद है।

(ii) व्याकरणात्मक टिप्पणी →

(अ) जालमादायोत्पतिताः → जालम् + आदाय + उत्पतिताः

(ब) नायमस्य → न + अयम् + अस्य

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

2 संकेत → विद्या विवादाय - - - - - - - - च रक्षणाय।

अन्वय →

खलस्य विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय। साधोः एतत् विपरीतं ज्ञानाय दानाय रक्षणायच।

प्रसंग →

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'रुचिरा' के दशम अध्याय 'सुभाषितवचनं' से लिया गया है। यह पाठ विभिन्न ग्रंथों से संकलित है। इसमे लेखक ने दुर्जन व सज्जन के बीच का भेद बताते हुए कहा है कि →

अनुवाद →

कवि वर्णन करते हुए कहते हैं कि दुर्जन की विद्या विवाद के लिए धन गलत कार्यों के लिए व शक्ति दूसरों को परेशानी पहुँचाने के लिए होती है जबकि यह साधु जनों में विपरीत होता है अर्थात् विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए, व शक्ति रक्षा करने के लिए होती है।

विशेष →

(i) इस पद्यांश की भाषा सरल, सरस व ज्ञानप्रद है।

(ii) व्याकरणात्मक टिप्पणी →

(अ) साधोर्विपरीतमेतत् → साधोः + विपरीतम् + एतत्

(ब) दानाय → दान शब्द, चतुर्थी विभक्तिः

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

3 संकेत → न जातु दुःखं - - - - - - - - - - - - - मम करणीयम् ।

अन्वय →

मया दुःखं जातु न गणनीयम्, निजसौख्यं च न मननीयम्। कार्य-क्षेत्रे त्वरणीयम् लोकहितं मम करणीयम् ।

प्रसंग →

प्रस्तुत पद्यांश अस्माकम् पाठ्यपुस्तक 'रुचिरा' इतियस्य सप्तम पाठः 'लोकहितं मम करणीयम्' इति शीर्षकात् उद्धृतः। अस्य रचयिता 'श्रीधरभास्कर वर्णेकरः' अस्ति। अस्मिन् पद्यांशे कविः लोककल्याणं प्रेरणा दत्वा वर्णयन् यत् →

व्याख्या →

मया स्वदुःखं कदापि न गणना करणीयम्, निज सुखं च न मनन कर्तव्यम् । कर्म-स्थाने शीघ्रता कर्तव्यम्, लोकस्य कल्याणं मे कर्तव्यम् ।

विशेष →

(i) अस्य पद्यांशस्य भाषा सरला, सरसा चास्ति ।

(ii) व्याकरणात्मक टिप्पणी →

(अ) करणीयम् → कृ धातुः, अनीयर् प्रत्यय

(ब) गणनीयम् → गण् धातुः, अनीयर् प्रत्यय

BSEB-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

4 संकेत → प्रथमा - वत्स एनं ---------- (इति निष्क्रान्ता)।

प्रसंग →

प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकम् 'रूचिरा' इति पाठ्यपुस्तकस्य चतुर्थः पाठः 'जृम्भस्व सिंह। दन्तांस्ते गणयिष्ये' इति शीर्षकाद् उद्धृतः। अस्य पाठस्य रचयिता महाकवि 'कालिदासः' अस्ति। अयम् पाठः 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' इति रचनाद् संकलितः। अस्मिन् पाठे कविः तापसी व बालकस्य वार्ता वर्णयन् कथितम् यत् →

व्याख्या →

प्रथमा - पुत्र एनं सिंहशिशुं त्यज। अपरं तव कृते क्रीडनकं दास्यामि।

बालः - कुन्न, देहि एतत् (इति हस्तं प्रसारयति)

द्वितीया - सुव्रते, न समर्थः अयम् वाणीमात्रेण विरमयितुम्। भवती गच्छतु। तत् मम कुटीरे मार्कण्डेयस्य मुनिकुमारस्य वर्णयुक्तः मृण्मयूरः अस्ति। तम् अस्य आनय।

प्रथमा - भवतु (इति कथित्वा निष्क्रान्ता)

विशेष →

(i) अस्य नाट्यांशस्य भाषा सरला सरसा चास्ति।

(ii) व्याकरणात्मक टिप्पणी →

(अ) मृतिकामयूरस्तिष्ठति → मृतिका मयूरः + तिष्ठति

(ब) देह्येतत् → देहि + एतत्

| प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|
| 5 | (i) "जयसुरभारति!" इति पाठस्य रचयिता डॉ॰ हरिरामाचार्य' अस्ति। |
| | (ii) "संघे शक्तिः" इति पाठानुसारेण "अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं जातम्, न जाने किम् अनभिमतं दर्शयिष्यति" इति लघुपतनकः नाम वायसः कथितवान्। |
| | (iii) स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः' इति कथनं भारतस्य अग्रजन्मनः कृते अस्ति। |
| | (iv) महाराणा प्रतापस्य राज्याभिषेकः गोगुन्दाग्रामे अभवत्। |
| | (v) "मरु सौन्दर्यम्" इति पाठानुसारेण "शुष्कोऽपि नित्यं सरसः स देशः" इति चरकेश्वन प्रशंसितः। |
| | (vi) महाराजः सूरजमल्लः 'महाराज बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत्। |
| 6 | का परमो धर्मः? |
| 7 | पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति? |
| 8 | एतेन कस्य न अपमानः? |
| 9 | केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत्? |

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

10 श्लोक लेखनम् →

(i) स्वर्णमयी अपि लंका न मे रोचते लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(ii) धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे व्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥

11 (क) शीर्षक –'विश्वबंधुत्वस्य महत्वम्'

(ख)
(i) दैनन्दिनव्यवहारे यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति।

(ii) समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति।

(iii) अधुना संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणं अस्ति।

(iv) सर्वेषु समत्वेन प्रकृतिः व्यवहरति।

(v) सूर्यचन्द्रयोः प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।

(ग)
(i) कर्तृपदं → 'मानवाः'

(ii) विशेष्यपदं → 'आवश्यकता'

(iii) संज्ञापदं → 'मानवाः'

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) विलोमपदं

12 (i) स्वागतम् → सु + आगतम् (यण् संधि)

(ii) दिग्गजः → दिक् + गजः (जशत्व संधि)

13 (i) पौ + अनः → पवनः (अयादि संधि)

(ii) रामः + च → रामश्च (सत्व विसर्ग संधि)

14 (i) प्रतिवारं → वारं वारं प्रति (अव्ययी भाव समास)

(ii) महाराजः → महान् चासौ राजा (कर्मधारय समास)

(iii) माता च पिता च → पितरौ (द्वन्द्व समास)

15 (i) ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।
- अस्मिन् वाक्ये 'ग्रामं' पदे 'परितः' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्तिः अस्ति।

(ii) सीता गीतया सह पठति।
- अस्मिन् वाक्ये 'गीतया' पदे 'सह' शब्दस्य योगे तृतीया विभक्तिः अस्ति।

(iii) नगरात् पृथक् आश्रमः अस्ति।
- अस्मिन् वाक्ये 'नगरात्' पदे 'पृथक्' शब्दस्य योगे पंञ्चमी विभक्तिः अस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

16 (i) प्रसन्नः बालकः शंकमानः ।

(ii) पठन् गोपालः गच्छति ।

17 (i) ज्ञानवान् → ज्ञान शब्दः, मतुप् प्रत्ययः

(ii) चटका → चटक शब्दः, टाप् प्रत्यय

18 (i) सूर्यः अग्निगोलकः इव प्रतिभाति ।

(ii) यत्र गच्छति तत्र तिष्ठति ।

(iii) कार्यस्य सहसा निर्णयं न करणीयम् ।

19 (i) त्वम् पाठं लिखसि → त्वया पाठः लिख्यते ।

20 (ii) रामेण पुस्तकं पठ्यते → रामः पुस्तकं पठति ।

21 (iii) मया साधुः दृश्यते → अहम् साधुं पश्यामि ।

22 (क) सीमा प्रातः दशकलाधिक नववादने विद्यालयं गच्छति ।

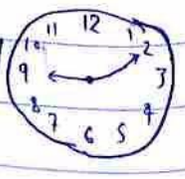

(ख) सा पुनः सपादत्रिवादने गृहं आगच्छति ।

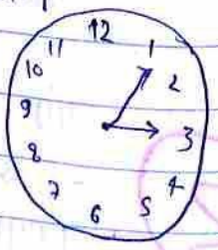

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

23 अशुद्ध वाक्य — शुद्ध वाक्य

(i) बालिकात्रयं प्रतिदिनं उपवनं गच्छन्ति → बालिका तिस्रं प्रतिदिनं उपवनं गच्छन्ति।

(ii) चतुष्पथे बलिवर्दाः कलहं करोति ——→ चतुष्पथे बलिवर्दाः कलहं कुर्वन्ति।

(iii) शिष्यः गुरुं निवेदयति ——→ शिष्यः गुरवे निवेदयति।

24

जामनगरतः
दिनाङ्कः 18 मार्च 2018

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु (i) सादरं प्रणतयः सन्तु। भवतां पत्रम् अधिगतम्। समाचारान् अधीत्य मे मनः (ii) भृशम् मोदतेतराम्। मईमासे (iii) अस्माकम् परीक्षा सम्पत्स्यते। सम्प्रति अध्ययनकर्म (iv) सम्यक् चलति। संस्कृत व्याकरणं (v) विहाय सर्वेषु विषयेषु दक्षतामापन्नोऽस्मि। व्याकरणास्यापि (vi) न्यूनताम् शीघ्रमेव अपनेष्यामि। (vii) मातरम् प्रति मे सादरं प्रणतयः।
(viii) अन्यत् कुशलम्।

भवत्कः सुतः
रमेशः

25 पुनीतः – सुरेश! त्वं कुत्र गच्छसि?
सुरेशः – पुनीत! त्वं अपि आगच्छ।
पुनीतः – अरे! तत् किं भवनम् अस्ति।
सुरेशः – तत् चिकित्सालय भवनम् अस्ति। आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः।
पुनीतः – सः केन रोगेण पीडितः अस्ति।
सुरेशः – सः उच्च रक्त चापेन च पीडितः अस्ति।

परीक्षक द्वारा | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

पुनीतः – ते श्वेत प्रावारकधारकाः के सन्ति। ते किं कुर्वन्ति?
सुरेशः – ते चिकित्सकाः सन्ति। ते उपचारं कुर्वन्ति।

26 (i) माता पुत्राय उपदिशति।

(ii) मह्यं फलानि रोचन्ते।

(iii) कक्षात् बहिः शिक्षकाः सन्ति।

(iv) तम् विना त्वम् न गच्छसि।

27 (i) शीतलः (i) पवनः मन्दं मन्दं प्रवहति।

(ii) सर्वत्र सुरभितकुसुमानां सुगन्धाः(ii)प्रसृतः अस्ति।

(iii) कुसुमाकरः (iii) वसन्त समागतः अस्ति।

(iv) भारते (iv) षट् ऋतवः भवन्ति।

(v) तेष्वयं वसन्तः (v) श्रेष्ठः अस्ति।

(vi) वसन्ते (vi) उद्यानानाम् शोभा दर्शनीया भवति।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

28 उचित क्रमांक - कथाक्रम संयोजन

(iv) - पुरा एकस्मिन् वने एका चटका प्रतिवसति स्म।
(v) - कालेन तस्याः सन्ततिः जाता।
(i) - एकदा कश्चित् प्रमत्तः गजः तत्र आगतवान्।
(vi) - वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अनोदयत्।
(iii) - चटकायाः नीडं भुवि अपतत्, तेन अण्डानि विशीर्णानि।
(ii) - अथ सा चटका व्यलपत्।

समाप्त

BSEB/1042018